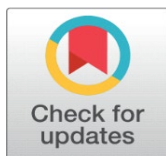
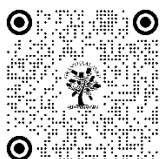


## RENOWNED EXPERIMENTAL ARTIST SURENDRA PAL JOSHI

### प्रख्यात प्रयोगधर्मी कलाकार सुरेन्द्र पाल जोशी

Vinod Kumar Goswami <sup>1</sup>  

<sup>1</sup> Researcher, Raja Man Singh Tomar University of Music and Arts, Fine Arts, Gwalior, Madhya Pradesh, India



#### ABSTRACT

**English:** Surender Pal Joshi one of the finest artist of India. Who was very much established in his field. He had his own style for his art works and that is why he was also known as an experimentalist, as he was always ready to come up with new experiments. His art works hold a very wonderful charm that everyone who sees them, tends to get mesmerized. He was born in the year 1958 in a village close to Dehradun. He did his primary and secondary education from Dehradun itself. After that he shifted to Rishikesh for his BA (Bachelor's In arts) and then did his B.F.A (Bachelor's in fine arts) from Lucknow University. He completed his BFA in 1985 as the top performer in the entire college. After that he went to Jaipur for further studies and from there itself his actual journey of becoming one of the finest artist of India started. He came up with new Creativity, New experiments, and a whole new series of his art works. Many of them were exhibited at Lalit Kala academy Jaipur in 1988 and it received a lot of appreciation. His paintings also used to depict an essence of Sufi assembly. He was also quite influenced by the great poet "Kabir" and did made many art works that used to portray Kabir's sayings. And that's how he got to know about the power of experimentalism. His art works also used to depict an essence of mother nature. And gradually he understood his areas of strength. With the power of his imagination and experiments he started his own journey of failures and success.

With time he started making his art works in different mediums like Metal, Board ceramic, Tera Cota, Wood steel, Glass, brass and what not. He tried everything that was possible whatever seemed not. made it possible too. Not only in India but his art works started receiving appreciation from other countries too. Became an international name. He was also bestowed with National awards. Now he started with a different form that was modern art works but with a traditional touch. His series were also named as " Taana-Baana". With years of hard work, risk taking abilities, with power of his imagination and experiments he became a sensation. And was always appreciated for his great ideas and designs. He was also called to visit various countries. He was also a professor in School of Art and served their from 1988 till 2004. He tool VRS and then decided to be a free artist. His years of hard work got him many awards, scholarships, and Fellowships. In 2013, impressed with his hard work and dedication, The Uttarakhand government proposed an idea to make a museum for him with all his art works installed. It was inaugurated in 2016. And in 2018 this great man departed from this world, leaving behind a whole big Era. He'll always be alive in our hearts, and I'll always be grateful for his teachings and guidance.

**Hindi:** सुरेन्द्र पाल जोशी भारत के महान कलाकारों में से एक हैं। जोशी जी की स्वयं की अपनी शैली थी और इसीलिए उन्हें एक प्रयोगवादी के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि वह अपनी कला के साथ हमेशा नए प्रयोग करते रहते थे। उनकी कलाकृतियों में इतना अद्भुत आकर्षण होता है कि जो कोई भी उन्हें देखता है, मंत्रमुग्ध हो जाता है। उनका जन्म साल 1958 में देहरादून के नजदीक एक गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा देहरादून से पूर्ण की थी। स्नातक शिक्षा के लिए जोशी जी पहले ऋषिकेश गए और फिर लखनऊ से बीएफए (चित्रकला) से पूर्ण किया। उन्होंने 1985 में अपना बीएफए प्रथम स्थान से पूर्ण किया। इसके बाद जयपुर में ही रह कर अपनी उच्चा शिक्षा व चित्रकला की स्वयं की प्रथम श्रंखला का चित्रांकन कार्य पूर्ण किया। उनमें से कई को 1988 में ललित कला अकादमी जयपुर में प्रदर्शित किया गया और इसे बहुत सराहना मिली।

**Received** 14 October 2021

**Accepted** 13 August 2023

**Published** 24 August 2023

#### Corresponding Author

Vinod Kumar Goswami,  
[vinod.goswami14nov@gmail.com](mailto:vinod.goswami14nov@gmail.com)

#### DOI

[10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.98](https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.98)

**Funding:** This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

**Copyright:** © 2023 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



उनके चित्रों में सूफी सभा का सार भी चित्रित होता था। वह महान कवि "कबीर" से भी काफी प्रभावित थे और उन्होंने कई कलाकृतियाँ बनाई जो कबीर की विचारों को चित्रित करती थी। उनकी कलाकृतियाँ मातृ प्रकृति के सार को भी चित्रित करती थी। अपनी कल्पना शक्ति और प्रयोगों के बल पर उन्होंने असफलताओं और सफलता की अपनी यात्रा शुरू की।

समय के साथ उन्होंने धातु, बोर्ड सिरेमिक, टेरा कोटा, लकड़ी स्टील, कांच, पीतल जैसे विभिन्न माध्यमों में अपनी कलाकृतियाँ में उपयोग करना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने हर असंभव विचारों को, संभव करने की कोशिश की, जोशी जी की कलाकृतियों को न केवल भारत में बल्कि दूसरे देशों से भी सराहना मिलने लगी। वह एक अंतरराष्ट्रीय नाम बन चुके थे। उन्हें कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया था। अब उन्होंने अलग विचार के साथ शुरुआत की, जो आधुनिक कलाकृतियाँ थीं लेकिन पारंपरिक स्पर्श के साथ। उनकी सीरीज का नाम भी 'ताना-बाना' रखा गया। वर्षों की कड़ी मेहनत, जोखिम लेने की क्षमता, अपनी कल्पना शक्ति और प्रयोगों से वह एक प्रसिद्ध कलाकार बन गए, और उनके महान विचारों के लिए उन्हें हमेशा सराहा गया। उन्हें विभिन्न देशों की यात्रा के लिए भी बुलाया गया। वह स्कूल ऑफ आर्ट में प्रोफेसर पद पर कार्यरत थे और उन्होंने 1988 से 2004 तक वहां सेवा की, तत्पश्चात उन्होंने वीआरएस लिया और फिर एक स्वतंत्र कलाकार बनने का फैसला किया। उनकी वर्षों की कड़ी मेहनत से उन्हें कई पुरस्कार, छात्रवृत्तियाँ और फैलोशिप मिलीं। 2013 में, उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण से प्रभावित होकर, उत्तराखंड सरकार ने उनकी सभी कलाकृतियों को स्थापित करके उनके लिए एक संग्रहालय बनाने का विचार प्रस्तावित किया। इसका उद्घाटन 2016 में किया गया था और 2018 में यह महान कलाकार इस दुनिया को अलविदा कह गए, और अपने पीछे एक बड़ा युग छोड़ गए। वह हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगे और मैं उनकी शिक्षाओं और मार्गदर्शन के लिए हमेशा आभारी रहूंगा।

**Keywords:** Experimental, Artist, Renowned, Education, Painting, प्रयोगधर्मी, कलाकार, प्रख्यात, शिक्षा, चित्रकारी

## 1. प्रस्तावना

सुरेन्द्रपाल जोशी (1988 से 2018) सुरेन्द्र जोशी आज के उन विशिष्ट कलाकारों में शामिल हैं, जो आधुनिक कला के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। इनका जन्म सन् 1958 में देहरादून के पास एक गांव में हुआ प्रारम्भिक शिक्षा गाँव और फिर माध्यमिक शिक्षा ऋषिकेश में होने के बाद लखनऊ से बी. एफ. ए. (पेंटिंग) प्रथम क्षेणी में किया लखनऊ के प्रसिद्ध कला महाविद्यालय (लखनऊ कलेज ऑफ आर्ट) के मेधावी छात्र रहे सुरेन्द्र को प्रारम्भ से ही गरीब और संघर्षशील सामाजिक तानेबाने से प्रेम थाए शायद अपने आप को उनमें देखते थे।



आज के जटिल लेकिन प्रयौगिक युग में जहाँ मानव हर समय गतिशील है। उससशीयाँ करण ने ही हमें कम्प्यूटर दिया, जो हमारे जीवन का अंह हिस्सा है, या यो कर्हे वह हमें संचालित कर रहा है, आज के

आधुनिक श्रोत हमें बहुत हद तक कम्प्यूटर से मिलते हैं वह कहते इस से बचने के लिए हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी है, नहीं हमारी स्वतंत्र पहचान बहुत जल्द इस सब के आश्रित हो जाएगी जिसमें कलाकार का मन खो जाएगा हाँ इससे हमें कुछ आवश्यक या बुनियादी लाभ मिले जैसे तकनीक जिसमें लेक्चर हमें बहुत हद तक कम्प्यूटर के द्वारा प्राप्त हो सकते हैं तो ले सकते हैं। उनके अनुसार एक कलाकार अपने तकनीक कौशल द्वारा कला जगत में सहज और संतुलित पहचान बना सकता है। जब यह औजार बन जाए तो दिम्भ्रमित कर चमहकृत भी कर देता है।

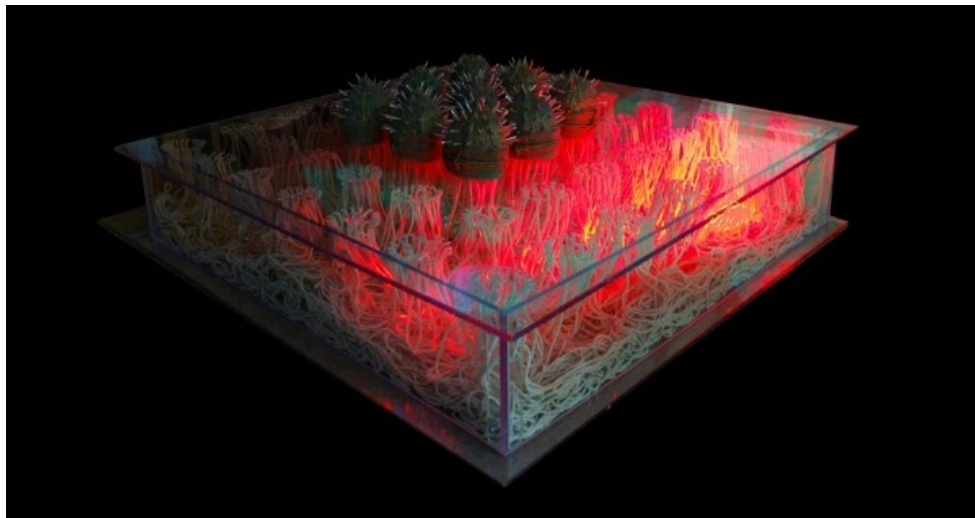
बचपन में इनके पिता के द्वारा कला के प्रति दूरदर्शिता और इनकी प्रतिमा को समझ लिया थाए तदर्थ गाँव में ही प्रकृति और जीव जन्तुओं के स्केच बनाने के लिए कहा करते, बाद में चूँकि 1971 में भारत.पाक युद्ध के दौरान फौजी पिता का सिर से अल्पायु में ही साया नहीं रहा, तदर्थ इनके बहनोई मंगलेश डबराल और माँ ने इन्हें कला के प्रति प्रोत्साहित किया।



बी.एफ.ए. की शिक्षा पूर्ण करने के बाद सुरेन्द्र रायल राजस्थान की राजधानी जयपुर आ गये और इसे ही अपनी कर्मभूमि बनाया। यहाँ इन्होंने कई चित्र श्रंखलाओं का निर्माण किया “काट होते लोग” में मशीनी युग से आज के मानव की तुलना की कि कैसे यह हमें नये जीवन की प्रेरणा देती है। जिस में “चक्को या कहें पहिया” इस श्रंखला का ऐसा प्रतीक रहा जो जीवन के चलायमान स्वरूप को दर्शाता है, हमारे भीतर और बाहर के भावों को नये अन्दाज में व्यक्त करता है। इस श्रंखला में और भी कुछ ऐसे ही प्रतीकों के साथ श्वेत-श्याम रंगों का समायोजन दर्शाया काठ के ठेले के सदृश्य “काठ होले लोग” में कुछ गहरे भाव थे। इसमें बने चित्रों को कार्बन पेपर द्वारा बनाये चित्रों की प्रदर्शनी लखनऊ में फुटबाल पर लगाई, चूँकि इन चित्रों के लिए गैलरी ने प्रदर्शनी करने से मना किया, जो बहुत चर्चित रही जनवरी में 1989 में लखनऊ में सफदरहासमी हत्या के फलस्वरूप, नुक्कड़ नाटक के साथ इस प्रदर्शनी को फुटपाथ पर सदृश्य दर्शाया गया, जयपुर आकर इनके रचना संसार का रूखापन सरस और चटख रंगों के साथ नये आयाम में आने लगा यहाँ के मेलों को अब अपने चित्रों में पिरोने लगे, साधू महात्मा भी यदाकदा इनके चित्रों में सूफी संगत देने लगे, अब चित्रों के साथ नया आयाम म्यूरल (मिश्रित चित्रण) भी इनकी तकनीक का मुख्य आकर्षक बिन्दु बनने लगा, इनके चित्रों में हमेशा से ही प्रयोगों के प्रति गहरा आर्कषण फूल, बच्चे, चिड़िया, साधू पादरी, सीडी “बियॉण्ड द सिटी” नयी सीराज की कल्पना को साकार अभिव्यक्ति देने लगे अब कभी म्यूरल में “अतिआधुनिक” तकनीक से रचना पूर्ण करते तो कभी चटख रंगों से मेलो का आकार प्रतीकात्मक लेकिन सपाट और सहज स्वीकृत होता आ रहा। 1994.95 में इस सीरीज “बियॉण्ड द सिटी” में लोक कला शैली को खूब अपने कैन्वस पर उकेरा। जो बहुत सहज व नूतन प्रयोग लगता था। इस श्रंखला की देश भर में प्रदर्शनी हुई और बहुत सराही गयी।

इसके बाद नये विचारों और नवीन प्रयोगों की श्रंखला “टाइम-टैक्चर” का प्रारम्भ लगभग एक दशक के बाद सन 2002.2003 में प्रारम्भ किया जिसमें आदिवासी महिलाओं द्वारा चुने कपड़ों से प्रेरणा लेकर भिन्न-भिन्न माध्यमों में प्रदर्शित किया, सुरेन्द्र जोशी अपने किसी भी कार्य को बहुत सोच समझकर और प्रायोगिक तकनीक से परिपक्व होकर ही प्रदर्शित करते, उक्त चित्र श्रंखला से चित्रों में बुनकरों द्वारा जो

बुनने से कुछ तैयार होता वह अब जोशी अपने अनौखे भाव से नये सयोजनों का निर्माण करने लगे, इस श्रंखला ने उन्हें सराट्रीय कला पुरस्कार दिलाया, अब उनके रचना संसार में नये पंख लग गये थे, देश विदेशों में इन सीरीज की कई चित्र प्रदर्शनी हो चुकी थी, 2010 में फिर ताना बाना सीरीज द्वारा अब अमूर्त चित्रण से सबको आकर्षित किया इसमें फूलों के रंगों का अक्स नये क्लेवर से व्यक्त किया चित्रों के साथ-साथ स्टील वुड तक और विभिन्न माध्यमों से कलाकृतियों का निर्माण करने लगे इनकी बनाई कृति विश्व स्तर पर पहचाने लगी देश-विदेश के बड़े कला उत्सवों में इन्हें खूब सराहा जाने लगा था।



इसके बाद मेमोरी लाइन (2015 में) प्रारम्भ की जिसमें बड़े साइज की कलाकृतियों के साथ-साथ "इन्टालेशन" स्कल्पचर भी बनने लगे जिससे इन्हें देश के बड़े कलाकारों में पहचान मिली, सुरेन्द्र जोशी के पुरस्कार 1980.85 मैरिट स्कालरशिप 1991 आलइंडिया अवार्ड, नागपुर 1991 यूनेस्को जापान से पुरस्कृत 1994, राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अवार्ड 1997 ब्रिटिश फैलोशिप फॉर म्यूरल डिजाइन। 2000 गोल्ड मेडल द्वारा यूनेस्को (जापान) 2004 ऑल इण्डिया अवार्ड लखनऊ ललित कला अकादमीए दिल्ली। 2005 कालेज शिक्षा निदेशालयए जयपुर।

सम्मान व पुरस्कार - सन् 1980, 85 में मेरिट स्कॉलरशिप कॉलेज ऑफ लखनऊ 1986, 88 स्कॉलरशिप ऑफ ललित कला अकादमी, लखनऊ, 1990 एशियन कल्चर सेन्ट्रल फॉर यूनेस्को जापान, 1991 ऑल इण्डिया अवार्ड साऊथ सेन्ट्रल कल्चर जोन, नागपुर 1992 राजस्थान ललित कला अकादमी, 1994 ऑल इण्डिया अवार्ड राजस्थान, ललित कला अकादमी 1997 फैलोशिप फॉर प्यूरल डिजाइन वाई ब्रिटिश आर्ट कौंसिल एण्ड चेयरलेस वेल्स ट्रस्ट वेल्स कार्डिफ यू. के. 2000 गोल्ड मेडल युनेस्को, 2001 ऑल इण्डिया अवार्ड तिलक स्मारक ट्रस्ट पूणे, 2004 ऑल इण्डिया अवार्ड, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी, 2004 नेशनल अवार्ड ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2005 कॉलेज शिक्षा राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित इत्यादि उपलब्धियाँ रही हैं। उन्होंने म्यूरल डिजाईन विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों स्वरूपों में डिजाइन किये हैं। जिसमें प्रौढ़ शिक्षा नई दिल्ली, 1989 ई से लेकर 2005 में जे.एन. टी. यू. कॉलेज ऑफ कार्टून आर्ट हैदराबाद में करते हु, सतत् क्रियाशील है। इसी के साथ विविध स्थलों पर सहभागिता स्वीकार की।

## CONFLICT OF INTERESTS

None.

## ACKNOWLEDGMENTS

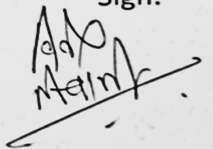
None.

### Author Note

मैंने अपने सन्दर्भों में वर्णित पुस्तकों का अध्ययन किया है और वहाँ की किसी भी पंक्ति का उपयोग नहीं किया है बल्कि उससे प्राप्त समझ का उपयोग किया है और इसलिए जो अस्तित्व में नहीं है उसे जोड़ना/बनाना संभव नहीं है।

इस लेख की सभी संदर्भ सामग्री का उपयोग मेरे द्वारा वाक्य या शब्द दर शब्द के रूप में नहीं किया गया है, या / और उद्धृत किया गया है और इन लेखों के सार का उपयोग करता रहा है। मेरे लेख को आकार देने के लिए मैं इन लेखकों का ऋणी हूँ।

Sign:



Vinod K. Goswami  
PhD. Stud. (2017)  
Rmt. Gwalior (M.P.)